Anusandhanvallari
Vol 2024, No.1
December 2024
ISSN 2229-3388

पाली साहित्यों में उल्लेखित बोधगया का इतिहास

[1]डॉ० सोनू, [2]डॉ० हौशला प्रसाद

[1]बौद्ध अध्ययन विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-110007

[2]बौद्ध अध्ययन विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-110007

सारांश: बोधगया बिहार राज्य के गया जिले में स्थित है। यह स्थान गया मुख्यालय से 16 किलोमीटर दक्षिण में स्थित है। यह स्थल बौद्ध धर्म के महत्वपूर्ण तीर्थस्थलों में से एक माना जाता है, जहां पर गौतम बुद्ध ने 6 वर्षो तक ध्यान किया। तत्पश्चात उन्हें 'बोधि' की प्राप्ति हुई। और इसी स्थान पर परम ज्ञान का सुख लेते हुए सात सप्ताह व्यतीत किए। बौद्ध मतानुयायियों के लिए यह स्थल अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। पालि साहित्य में बोधगया को 'उरुवेला' के नाम से उल्लेखित किया गया है। चीनी यात्री फ़ाहियान और ह्वेनसांग ने भी इस स्थल का वर्णन अपने यात्रा वृतांत में किया है। ह्वेनसांग ने अपने यात्रा वृतांत में यहां पर स्थित महाबोधि मंदिर का विस्तृत वर्णन किया है। प्राचीन काल में निरंजना नदी के आसपास के क्षेत्र को उरुवेला कहा जाता था। यह शोध-पत्र बौद्ध साहित्यों में वर्णित बोधगया के इतिहास से संबंधित है जिसमें बोधगया के ऐतिहासिक महत्व का वर्णन किया गया है। पालि साहित्यों में बोधगया के संदर्भ में उरुवेला शब्द का कई बार प्रयोग देखने को मिलता है। निदानकथा, अंगुत्तरनिकाय, ललितविस्तर, मज्झिमनिकाय, महावग्ग, महावंश, आदि में उरुवेला का विवरण मिलता है। बोधगया का प्रमुख आकर्षण यहां स्थित महाबोधि मंदिर है। जिसे बौद्ध अनुयायियों और पर्यटकों का एक महत्वपूर्ण पुनरागमन स्थल माना जाता है। बोधगया सात पवित्र स्थलों के लिए भी प्रसिद्ध है जहां पर बुद्ध ने सात सप्ताह व्यतीत किए थे। जिसमें से प्रथम सप्ताह बोधिवृक्ष के नीचे, द्वितीय सप्ताह अनिमेषलोचन स्तूप, तृतीय सप्ताह चंक्रमण करते हुए, चतुर्थ सप्ताह रत्नघर, पंचम सप्ताह अजपाल न्यग्रोध वृक्ष के नीचे, षष्ठ सप्ताह मुचलिन्द सरोवर एवं सप्तम सप्ताह राजायतन वृक्ष के नीचे व्यतीत किया। बौद्ध धर्म की दृष्टि से ये सभी स्थल अत्यंत महत्वपूर्ण है।

मुख्य शब्द- उरुवेला, बोधिवृक्ष, बोधि, निदानकथा, अंगुत्तरनिकाय, ललितविस्तर, मज्झिमनिकाय, महावग्ग, महावंश आदि

प्रस्तावना

बोधगया बिहार राज्य के गया जिले में स्थित है। यह संसार के बौद्ध मतानुयायियों के लिए सर्वाधिक और परम पावन धर्म स्थल है। प्राचीन काल में बोधगया को उरुवेला के नाम से जाना जाता था। छठी शताब्दी ईसा पूर्व शाक्य वंश के राजकुमार सिद्धार्थ गौतम अपने राजमहलों का वैभव एवं आनंदमयी जीवन का त्याग करके इसी उरुवेला में एक सन्यासी के रूप में आए थे।[1] इसी स्थान पर सिद्धार्थ गौतम को बुद्धत्व की प्राप्ति हुई थी। बौद्ध धर्म में इस स्थान को सबसे पवित्र स्थल माना जाता है। वर्तमान में यह स्थल निरंजना (फल्गु) नदी के तट पर स्थित है। दीघनिकाय के महापरिनिर्वाण सुत्त में भगवान बुद्ध ने चार प्रमुख स्थलों का उल्लेख किया है जिसमें बोधगया भी सम्मिलित है। बुद्ध ने बौद्ध अनुयायियों को इन स्थलों की यात्रा करने की सलाह दी है।[2]

कई विद्वानों ने उरुवेला शब्द को अपने-अपने तरीके से परिभाषित किया है। कुछ विद्वानों ने उरुवेला शब्द का अर्थ स्पष्ट किया है जिसमें 'उरु' का अर्थ 'रेत' तथा 'वेला' का अर्थ 'टीला' बताया है। अर्थात उरुवेला से तात्पर्य है - रेत का टीला।[3] ललितविस्तर में 'उरुवेला' का अर्थ है वह स्थान जहां पर कई तालाब हो।[4] जिससे तात्पर्य यह है कि यह स्थान प्राकृतिक रूप से रेतीला था। और चारों ओर से तालाबों से घिरा हुआ था। उरुवेला सेनानी नामक व्यक्ति के अधीन था। जिसका नाम नंदिक था। वह सुजाता का पिता था। जिसने भगवान बुद्ध को खीर खिलाया था। ललितविस्तर में सुजाता के साथ अन्य नौ युवतियों का उल्लेख भी मिलता है। कुछ परिच्छेदों में उरुवेला नामक जंगल का उल्लेख मिलता है जिसके पास उरुवेला नाम का ही एक गाँव था। जो अपने 'विल्वा' नामक पेड़ों के लिए प्रसिद्ध था। विल्वा वृक्ष को 'बेल' का वृक्ष भी कहा जाता है। जिससे उरुवेला का अर्थ यह निकलता है कि वह स्थान जहां पर बहुत सारे बेल वृक्ष हो।[5] उरुवेला में ही कश्यप भाइयों के ज्येष्ठ भाई का आश्रम था

। इसीलिए उसे उरुवेल कश्यप के नाम से जाना जाता था। कनिंघम का ऐसा मानना है कि प्राचीन काल में यहां पर प्राकृतिक बाढ़ के कारण रेत के ढेर एकत्रित हो गए थे जिसकी वजह से निरंजना नदी का तटीय भाग 16 मील तक फैल गया था। [6]

भौगोलिक परिचय

प्रस्तुत शोध स्थल वर्तमान में भारत के उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में अवस्थित है। बिहार राज्य को 9 प्रमंडल में विभक्त किया गया है। जिसमें से शोध क्षेत्र मगध प्रमंडल के गया जिले में स्थित है। 1981 में मगध प्रमंडल का निर्माण किया गया जिसके अंतर्गत गया, अरवल, औरंगाबाद, जहानाबाद, नवादा जिले आते है।[7] गया जिले का क्षेत्रफल 4976 वर्ग किलोमीटर है।[8] गया जिले के 4 उपमंडल है - (1) गया सदर (2) टेकरी (3) शेरघाटी (4) नीमचक बथानी। शोध क्षेत्र गया सदर अनुमंडल के अंतर्गत आता है। गया उत्तर दिशा में पटना, पूर्व दिशा में मुंगेर एवं हजारीबाग, दक्षिण में हजारीबाग एवं पलमऊ जिले और पश्चिम में सोन नदी से सीमा सम्बद्ध है। गया जिले की प्रमुख नदियां- सोन (Son), पुनपुन (Poonpoon), अदरी (Adri), मदर(Madar), धावा (Dhawa), मोरहर (Morhar), जमुना (Jamuna), फल्गु (Phalgu), पैमार (Paimar), धड़कर (Dhadkar), तिलैया (Tilaiya), धनारजी (Dhanarji) और सकरी (Sakri) है।[9] इसमें शोधकार्य के दृष्टि से फल्गु नदी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

बोधगया गया सदर उपमंडल के अंतर्गत स्थित है। जो गया मुख्यालय से 16 किलोमीटर दक्षिण में स्थित है। भौगोलिक दृष्टि से शोध स्थल का स्थान उत्तरी अक्षांश रेखा 24°41'45.0"N पूर्वी देशान्तर रेखा 84°59'28.7"E पर स्थित है।[10]

यूनेस्को की रिपोर्ट के अनुसार सम्पूर्ण महाबोधि परिसर कुल 12 एकड़ की भूमि पर विस्तृत है। जिसमें परिसर को दो भागों में विभाजित किया जाता है। एक जहां मुख्य मंदिर स्थित है और दूसरा जहां मुचलिन्द सरोवर स्थित है। मुख्य मंदिर 5.5 एकड़ की भूमि पर फैला है। मुचलिन्द सरोवर सहित महाबोधि मंदिर परिसर बाहरी चारदीवारी द्वारा संरक्षित है। बाहरी चारदीवारी की ऊंचाई पूर्व में 10 फुट 6 इंच, पश्चिम में 11 फुट, उत्तर में 15 फुट और दक्षिण में 7 फुट है। बाहरी चारदीवारी की कुल लंबाई पूर्व में 204 फुट, पश्चिम में 110 फुट, उत्तर में 169 फुट और दक्षिण में 263 फुट है।[11]

बौद्ध साहित्य में बोधगया का वर्णन

बौद्ध साहित्यों में बुद्ध के बोधि प्राप्ति के स्थान को 'उरुवेला' के रूप में उल्लेखित किया गया है जो वर्तमान में बोधगया नाम से प्रसिद्ध है। महावंश में उल्लेखित है कि भगवान बुद्ध मगध क्षेत्र से होकर उरुवेला में आए थे और इसी स्थान पर वैशाख पूर्णिमा के दिन बोधिवृक्ष के नीचे उन्हे बुद्धत्व की प्राप्ति हुई थी। बुद्धत्व प्राप्ति के पश्चात उन्होंने इसी स्थान पर सात सप्ताह परम ज्ञान का आनंद लेते हुए व्यतीत किए।[12] भगवान बुद्ध ने निदानकथा में उरुवेला का वर्णन करते हुए कहते है। कि यह स्थल अत्यंत सुंदर एवं रमणीय है क्यों न यही पर ध्यान किया जाए। निदानकथा में बुद्ध ने इस स्थल की बहुत प्रशंसा की है।[13] मज्झिमनिकाय के वत्थसुत्तं में सात पवित्र नदियों का वर्णन किया गया है जिसमें गया को भी एक पवित्र नदी के रूप में उल्लेखित किया गया है।[14]

अंगुत्तरनिकाय में भी उरुवेला से संबंधित विवरण मिलता है। इसमें उरुवेला को निरंजना नदी के तट पर स्थित बताया गया है। इस अनुवादित भाग में भगवान बुद्ध भिक्षुओं को इस स्थान की महत्ता के बारे में एवं बोधि संबंधी देशना दे रहे है।[15] ललितविस्तर के दुष्करचर्या परिवर्त में उरुवेला के प्राकृतिक सौन्दर्य का वर्णन किया गया है।[16] महावग्गपालि में भी उरुवेला को निरंजना नदी के तीरे स्थित बताया है।[17]

मज्झिमनिकाय में भगवान बुद्ध ने उरुवेला का वर्णन कुछ इस प्रकार किया है " मैं उदात्त शांति की सर्वोच्च स्थिति को खोजता रहा और मगध क्षेत्र में तब तक भटकता रहा, जब तक की मैं उरुवेला के समीप सेनानी ग्राम नहीं पहुँच गया। यहां पर मैंने एक भूमि का टुकड़ा देखा। एक अतिसुन्दर उपवन जिसके साथ पवित्र और शुद्ध जल की धारा सहित नदी प्रवाहित हो रही थी। जिसके किनारे अत्यंत सुगम थे और भिक्षा के लिए समीप ही एक गाँव था। यह स्थान तप करने के लिए अत्यंत उत्तम है यही सोच कर सन्यासी गौतम यहां पर रुक गए और तपस्या में अंतर्ध्यान हो गए।[18]

ललितविस्तर में उरुवेला के प्राकृतिक सौन्दर्य का उल्लेख किया गया है जिसमें बोधिसत्व अपनी इच्छानुसार गयाशीर्ष पर्वत पर भ्रमण करते हुए उरुविल्ला नामक स्थान पर गए। वहां निरंजना नदी के निर्मल और स्वच्छ जल को देखा। जिसके घाट अति सुंदर थे। नदी के किनारे छायादार वृक्ष तथा झुरमुट तृण थे। उनके मन में यह जिज्ञासा उत्पन्न हुई की। वह यही पर ठहर जाए।[19] महावग्ग में भी उरुवेला को निरंजना नदी के तट पर स्थित बताया गया है।[20]

महाबोधि मंदिर

महाबोधि मंदिर का निर्माण वास्तुकला का एक उत्तम उदाहरण माना जाता है। मंदिर के निर्माण में नीली ईंटों का प्रयोग किया गया है। मंदिर बाहर की ओर से लगभग 47 फीट 3 इंच लंबा और 48 फीट 8 इंच चौड़ा है। इसका आधार अंदर से 20 फीट 4 इंच लंबा और 13 फीट चौड़ा है। इस मंदिर की ऊंचाई लगभग 170 फीट है। मंदिर का निर्माण एक ऊंचे चबूतरे पर किया गया है। जो बड़े आकार के नीले रंग की ईंटों और ग्रेनाइट के पत्थरों पर स्थित है। मंदिर की बाहरी दीवारों पर ऊपर से नीचे तक एक पंक्ति में कलात्मक खांचे बनाए गए है। जिसमें प्राचीन काल की बुद्ध प्रतिमाओं को स्थापित किया गया है।[21] इस मंदिर की संरचना गुप्तकालीन प्रतीत होती है। क्योंकि चीनी यात्री फ़ाहियान ने अपने यात्रा वृतांत में वर्तमान में स्थित महाबोधि मंदिर का उल्लेख नहीं किया है। उनके अनुसार उस समय इस स्थान पर ऐसी संरचना स्थापित नहीं थी परंतु चीनी यात्री ह्वेनसांग ने अपने यात्रा वृतांत में महाबोधि मंदिर की उपस्थिति का उल्लेख किया है और साथ ही यहां पर स्थित महाबोधि मंदिर का पूर्ण विवरण भी प्रस्तुत किया है जिससे यह प्रमाणित होता है कि वर्तमान में स्थित महाबोधि मंदिर गुप्तकालीन है।

रीस डेविडस् ने उल्लेखित किया है कि वास्तविक महाबोधि मंदिर का निर्माण मौर्य सम्राट अशोक के द्वारा किया गया था और कालांतर में इस महाबोधि मंदिर में अनेकों बार परिवर्तन हुए और अनेकों बार इनका इसका पुनर्निर्माण किया गया। पुनर्निर्माण के साथ-साथ इस महाबोधि मंदिर में कई और नई कलाओं एवं वस्तुओं का समागम हुआ। वेदिकाओं का कुछ भाग और संभवतः वज्रासन का कार्य भी सम्राट अशोक के काल में ही प्रारंभ किया गया होगा।[22]

चीनी यात्री ह्वेनसांग ने सातवीं शताब्दी ईस्वी में बोधगया की यात्रा की। और अपने यात्रा वृतांत में मुख्य मंदिर का वर्णन कुछ इस प्रकार से किया है –

"बोधिवृक्ष की पूर्व दिशा में लगभग 170 फीट ऊंचाई वाला एक मंदिर स्थित है। जिसका आधार 50 वर्ग फीट या उससे अधिक है। इसका निर्माण नीली ईंटों के द्वारा किया गया था। इस मंदिर की बाह्य दीवारों पर नीचे से ऊपर तक पंक्तिबद्ध खाँचो को निर्मित किया गया था। और प्रत्येक आले में बुद्ध की अलंकृत प्रतिमाओं को स्थापित किया गया था। मंदिर की दीवारें विभिन्न प्रकार की उत्तम मूर्तियों, मोती निर्मित तोरण और बोधिसत्वों की प्रतिमाओं से आच्छादित थी। मंदिर का शीर्ष आमलक आकृति जैसा प्रतीत होता है।[23]

सात पवित्र स्थल

1 बोधिवृक्ष - भगवान बुद्ध उरुवेला में निरंजना नदी के किनारे बोधि-वृक्ष के नीचे, प्रथम बुद्धपद को प्राप्त हुए थे। भगवान बोधिवृक्ष के नीचे सप्ताह भर एक आसन से मोक्ष का आनंद लेते हुए बैठे रहे।[24] यह मुख्य मंदिर के पश्चिमी दीवार से सटा हुआ है। बोधिवृक्ष मुख्य मंदिर के पश्चिम में स्थित है। मंदिर की पश्चिमी दीवार के समीप ही वास्तविक वज्रासन को देखा जा सकता है। बोधिवृक्ष के चारों ओर लगभग 3 फुट ऊंचे आधार पर वेदिकाओं का निर्माण किया गया है। ये वेदिकाएं बोधिवृक्ष और प्राचीन वज्रासन को तीन दिशाओं से घेरती है क्योंकि पूर्व दिशा में मुख्य मंदिर की दीवार से घिरा हुआ है।

बोधिवृक्ष से दक्षिण दिशा की वेदिकाओं में 5 स्तंभ स्थित है। जिसके मध्य में एक द्वार है। जो सामान्य जन के लिए नहीं खुलता है। यह द्वार बंद ही रहता है। बोधिवृक्ष की पश्चिमी वेदिकाओं में कोने के स्तंभ सहित कुल 7 स्तंभ है। जिसके मध्य में झरोखा जैसा कुछ प्रतीत होता है। जिसमें से श्रद्धालु बोधिवृक्ष और प्राचीन वज्रासन के दर्शन करते है। उत्तर दिशा में 4 स्तंभ है जिसके मध्य में एक द्वार है जो बंद रहता है।

बोधिवृक्ष के अत्यंत प्राचीन हो जाने की वजह से इसकी टहनियाँ कमजोर पड़ गई है जिसके लिए इन टहनियों को सहारा देने के लिए लंबे-लंबे लोहे की छड़ों के द्वारा इन टहनियों को नीचे से सहारा दिया गया है। जिससे यह टहनियाँ गिर न सके। और इन टहनियों पर औषधि का लेप भी लगाया जाता है जिससे किसी प्रकार का कीड़े वृक्ष को न लगे और वृक्ष को किसी प्रकार का संक्रमण न लग सके।

2 अनिमेषलोचन स्तूप – बुद्धपद की प्राप्ति के पश्चात बुद्ध ने दूसरा सप्ताह इसी स्थान पर मोक्ष का आनंद लेते हुए बोधिवृक्ष को निर्निमेष देखते हुए व्यतीत कर दिया। इसी कारण स्थान का नाम अनिमिस-चेतिय (अनिमेष चैत्य) हो गया।[25] यह महाबोधि परिसर में ही मुख्य मंदिर के सामने पूर्व में स्थित है। यह एक छोटा मंदिर जैसा प्रतीत होता है जिसका निर्माण ईंटों द्वारा किया गया है और इसकी दीवारों को पलस्तर किया गया है। इसमें एक छोटी बुद्ध की प्रतिमा को भी स्थापित किया गया है।

इसे लघु मंदिर भी कहा जा सकता है अथवा इसे मुख्य मंदिर का छोटा प्रतिरूप भी माना जा सकता है। इसे देखने से प्रतीत होता है कि यह मुख्य मंदिर का छोटा स्वरूप है। इसका मुख पूर्व दिशा की ओर है। और यह मुख्य मंदिर के सामने उत्तर-पूर्व दिशा में स्थित है। यह मुख्य मंदिर से थोड़ी ऊंचाई पर स्थित है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह स्तूप किसी ऊंचे टीले पर निर्मित किया गया है। इसके अंदर स्थित मुद्रा में बुद्ध की मूर्ति को स्थापित किया गया है। इसके प्रवेश द्वार के ऊपरी हिस्से में एक आला बनाया गया है। और इस आलें में ध्यानस्थ मुद्रा में बुद्ध की लघु मूर्ति को स्थापित किया गया है। इसके चारों ओर छोटे प्रदक्षिणा पथ का भी निर्माण किया गया है।

3 चंक्रमण चैत्य – वज्रासन और अनिमेषलोचन चैत्य के मध्य स्थित भूमि को चंक्रमण भूमि बना बुद्ध ने (पूर्व से पश्चिम को) रत्न भर चौड़े रत्न-चंक्रमण पर, चंक्रमण क्रिया करते हुए एक सप्ताह व्यतीत किया। अतः उस स्थान का नाम **रत्न चंक्रमण चेतिय** पड़ा।[26] ऐसा ही वर्णन निदान कथा में भी किया गया है।[27] परिवर्तित काल में इसी स्थान पर एक चबूतरा बना दिया गया जो 53 फुट लंबा, 3 फुट ऊँचा और 3 फुट 6 इंच चौड़ा है। प्रो॰ अग्रवाल के अनुसार इसके दोनों ओर 11 स्तंभ कुंभिका या स्तंभों की चौकियाँ थी जो चंक्रमण की छत के स्तंभों के लिए बाद में जोड़ी गईं।[28] इस चबूतरे पर बुद्ध के पदचिन्हों को 19 कमल पुष्पों के द्वारा दर्शाया गया है।

यह मुख्य मंदिर की उत्तर दिशा में स्थित है। यह मुख्य मंदिर की उत्तरी दीवार से एकदम समीप लगभग 2 फुट की दूरी पर निर्मित एक 3 फुट ऊँचा और 53 फुट लंबा चबूतरा है जिसके ऊपर बुद्ध के पदचिह्नों को इंगित करने के लिए 19 कमल फलकों को स्थापित किया गया है। और इस चबूतरे की उत्तर दिशा की ओर वास्तविक चक्रमण पदचिह्नों के अवशेषों को रखा गया है जो ग्रेनाइट पत्थर से बने प्रतीत होते है। जिनकी संख्या 9 है और इसमें से दो क्षति ग्रस्त है और आधे है। इसकी स्थिति पूर्व से पश्चिम की ओर है।

4 रत्न गृह – चतुर्थ सप्ताह में देवताओं ने बोधि से पश्चिमोत्तर दिशा में रत्न-घर बनाया था। वही आसन पर बैठ बुद्ध ने अभिधर्म-पिटक के अनंत क्रमवाले समन्त पट्ठान पर विचार करते हुए सप्ताह व्यतीत किया। इस विषय में अभिधार्मिकों का कथन है- "रत्नधर रत्नमय-गृह का नाम नहीं है, बल्कि (अभिधर्म के) सात प्रकरणों का संग्रह-स्थान ही रत्न-घर है।" यहाँ दोनों ही अर्थ, संगत प्रतीत होते है, इसलिए दोनों ही अर्थ ग्रहण करने चाहिए। उसके बाद उस स्थान का नाम **रत्न-घर-चेतिय** पड़ा।[29]

यह मुख्य मंदिर के उत्तर पश्चिम दिशा में स्थित है। इसका मुख्य द्वार उत्तर दिशा की ओर है। इसके भीतर बुद्ध एवं विभिन्न बोधिसत्वों की मूर्तियों को स्थापित किया गया है। और साथ ही रत्न गृह के अंदर कुछ मनौती स्तूप की स्थिति को भी देखा जा सकता है। रत्न गृह के चारों ओर वेदिकाओं का निर्माण किया गया है और इन वेदिकाओं में उत्तर दिशा की ओर एक छोटा प्रवेश द्वार है। इस वेदिका के स्तंभ और सूचियों पर प्राचीन वेदिका की ही भांति मनोरम नक्काशी की गई है और विभिन्न चिह्नों एवं दृश्यों को प्रदर्शित किया गया है। इस वेदिका में 4 कोने के स्तंभ के साथ उत्तर में प्रवेश द्वार सहित 6 स्तंभ है। पश्चिम में 6 स्तंभ, दक्षिण में 7 स्तंभ और पूर्व दिशा में 6 स्तंभ स्थित है। ये वेदिकाएं प्रदक्षिणा पथ को घेरे हुए हैं। इसको सामान्य सतह से 1 फूट ऊँचा बनाया गया है। और इसके चारों ओर मनौती स्तूपों की उपस्थिति को देखा जा सकता है।

5 अजपाल न्यग्रोध वृक्ष – सप्ताह बीतने पर भगवान उस समाधि से उठकर, बोधि-वृक्ष के नीचे से वहाँ गए, जहाँ अजपाल नामक बर्गद का वृक्ष था। वहाँ पहुंचकर अजपाल बर्गद के वृक्ष के नीचे सप्ताह भर मोक्ष का आनंद लेते हुए, एक आसन से बैठे रहे।[30] यह मुख्य मंदिर के बिल्कुल सामने

पूर्व दिशा में स्थित है। इस वृक्ष को एक स्तंभ द्वारा दर्शाया गया है। और इस स्तंभ के शीर्ष पर बुद्ध की छोटी आकृति वाली मूर्ति को स्थापित किया गया है। यह सभी आधुनिक समय में किए गए निर्माण कार्य को दर्शाती है।

निदानकथा में वर्णित है कि बुद्ध चार सप्ताह बिताकर, पाँचवे सप्ताह बोधिवृक्ष से उठकर अजपाल नामक बरगद के निकट चले गए। वहाँ भी धर्म पर विचार करते तथा विमुक्तिमुख का आनंद लेते बैठे रहे। यह देखकर मार बहुत चिंतित हुआ और उसने अपनी तीन पुत्रियों तृष्णा, अरति तथा राग को आदेश दिया कि वह बुद्ध की तपस्या को भंग करके बुद्ध को अपने वश में करें। अभिमानवश मार की तीनों पुत्रियाँ अपने पिता से कहती है कि आप चिंता न करे। हम लोग इसे अपने वश में कर लेंगे। तब मार कहते है कि कोई भी इसे को वश में नहीं कर सकता है। यह अचल श्रद्धा में प्रतिष्ठित पुरुष है। मार की पुत्रियाँ कहती है कि हम लोग स्त्रियाँ है। अभी उसे राग (आसक्ति) आदि के पाश में बांध कर ले आएंगी। इसके पश्चात मार की तीनों पुत्रियों ने अथक प्रयास किए परंतु वह विफल रही। उनका अभिमान खंडित हो गया और वह वापस अपने पिता के पास लौट गयी।[31]

अंगुत्तरनिकाय में ऐसा उल्लेख मिलता है कि बुद्ध उरुवेला की निरंजना नदी के किनारे अजपाल न्यग्रोध के नीचे प्रथम सम्बोधि हेतु बैठे थे और तभी एक वृद्ध ब्राह्मण वहां आकर उनसे वाद-विवाद करने लगता है। तब बुद्ध उस ब्राह्मण को यह समझाते है कि मनुष्य जन्म से नहीं बल्कि अपने कर्मों से ब्राह्मण होता है।[32]

6 मुचलिन्द सरोवर – फिर सप्ताह बीतने पर भगवान उस समाधि से उठ, अजपाल बर्गद के नीचे से वहाँ गये, जहाँ मुचलिन्द (वृक्ष) था। वहाँ पहुंचकर मुचलिन्द के नीचे सप्ताह भर मोक्ष का आनंद लेते हुए एक आसन से बैठे रहे। उस समय सप्ताह भर तक असमय में उठा महामेघ ठंडी हवा वाली वर्षा में परिवर्तित हो गया। तब मुचलिन्द नागराज अपने घर से निकलकर भगवान के शरीर को सात बार अपने देह से लपेटकर शिर पर बड़ा फण तानकर खड़ा हो गया। जिससे की भगवान के शरीर को शीत, उष्ण, डंस, मच्छर, वात, धूप तथा रेंगने वाले जन्तु कष्ट न दे सकें।[33]

यहां मुख्य मंदिर की दक्षिण दिशा में एक बड़ा कृत्रिम सरोवर है जिसके मध्य में मुचलिन्द नाग से आच्छादित बुद्ध की प्रतिमा को स्थापित किया गया है। इसको देखने से यह प्रतीत होता है कि इसके रख-रखाव पर ध्यान नहीं दिया जाता है क्योंकि सरोवर का पानी बिल्कुल हरा दिखाई देता है और अजीब सी दुर्गंध भी आती है। और सरोवर महाबोधि परिसर के आधे हिस्से में बना है।

7 राजायतन वृक्ष– सप्ताह बीतने पर भगवान फिर उस समाधि से उठे मुचलिन्द के नीचे से वहाँ गए, जहाँ राजायतन वृक्ष था। वहाँ पहुंचकर राजायतन के नीचे सप्ताह भर मोक्ष का आनंद लेते हुए एक आसन से बैठे रहे। उस समय तपस्सु और भल्लिक नामक दो बंजारे उत्कल देश से उस स्थान पर पहुंचे। उन्होंने भगवान को राजायतन वृक्ष के नीचे विहार करते देखा और भगवान को अभिनव शिलामय पात्र में मट्ठे और लड्डू को अर्पित किया। तत्पश्चात संसार में वही दोनों (बुद्ध और धर्म) दो वचनों से प्रथम उपासक हुए।[34] महावग्ग में भी इस घटना का उल्लेख मिलता है।[35] दोनों व्यापारी भाई बुद्ध तथा धम्म की शरण में जा द्विवाचिक उपासक हुए। उसके बाद उनके यह कहने पर भन्ते हम लोगों को एक पूजा के लिए निमित्त दें। उन्होंने दाहिने हाथ से अपने सिर का स्पर्श कर उन्हें केशधातु (बाल) प्रदान की। उन्होंने अपने नगर में उस केशधातु को (स्वर्ण मंजूषा के) गर्भ में रख उस पर चैत्य बनवाया।[36]

इसे भी आधुनिक वेदिकाओं से घेर दिया गया है। इसमें प्रवेश के लिए पूर्व दिशा की वेदिका में एक प्रवेश द्वार दिया गया है। और शेष तीन दिशाएं वेदिकाओं से आच्छादित हैं। इसकी पूर्व दिशा की वेदिकाओं में कोने के स्तंभों सहित कुल 6 स्तंभ है। उत्तर दिशा में कोने के स्तंभ सहित कुल 5 स्तंभ है। पश्चिम दिशा में भी कोने के स्तंभ सहित 5 स्तंभ है और दक्षिण दिशा में 4 स्तंभ है।

दीपवंश में भी इस सात पवित्र स्थलों के उल्लेख मिलते है। दीपवंश में वर्णित है कि बुद्ध ने इन सात आसनों पर सात सप्ताह पर्यंत विविध प्रकार से विमुक्तिमुख का आनंद लेते हुए धर्मचक्र-प्रवर्तन हेतु वाराणसी की ओर प्रस्थान किया।[37] निदानकथा में भी इन सात स्थलों का विस्तृत वर्णन उल्लेखित है।[38]

उपसंहार

उपरोक्त विवरणों से ज्ञात होता है कि बौद्ध धर्म में ऐतिहासिक दृष्टि से बोधगया का अत्यधिक महत्व है। इसके अतिरिक्त बोधगया बौद्ध अनुयायियों के लिए पूजनीय स्थल है। शताब्दियों से इस स्थल पर बौद्धों ने भक्तिभाव से यहां की यात्रा की और बुद्ध के प्रति अपनी आस्था को प्रकट किया। पालि साहित्यों से प्राप्त विवरणों से इसकी महत्ता और अधिक बढ़ जाती है। बौद्ध साहित्य के अध्ययन से सामान्य जन को भी बोधगया के महत्व को जानने में सहायता मिलती है और बोधगया में घटित बुद्ध संबंधी सभी घटनाओं का भी ज्ञान प्राप्त होता है।

संदर्भ ग्रंथ-सूची

[1] बौद्ध, आचार्य जुगल किशोर, बोधगया: अतीत से वर्तमान तक, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010, पृष्ठ सं-75
[2] शास्त्री, स्वामी द्वारिकादास, दीघनिकायपालि (महावग्गो), अनुवादित, बौद्ध भारती, वाराणसी, उत्तर प्रदेश, 1996, पृष्ठ सं-392
[3] कनिंघम, अलेक्जेंडर, महाबोधि ऑर द ग्रेट बुद्धिस्ट टेम्पल अन्डर द बोधि ट्री एट बोधगया, डब्लू. एच. एलेन एण्ड कॉ. लंदन, 1892 पृष्ठ सं-1
[4] शास्त्री, शांति भिक्षु, ललितविस्तर, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, 1984, पृष्ठ सं- 479
[5] कनिंघम, अलेक्जेंडर, महाबोधि ऑर द ग्रेट बुद्धिस्ट टेम्पल अन्डर द बोधि ट्री एट बोधगया, डब्लू. एच. एलेन एण्ड कॉ. लंदन, 1892 पृष्ठ सं-2
[6] वही, पृष्ठ सं-2
[7] https://gaya.nic.in/tehsil/
[8] https://gaya.nic.in/topography/
[9] चौधरी, पी० सी० रॉय, गया गज़ेटीर्स, बिहार सरकार प्रेस, पटना, 1957, पृष्ठ सं- 1
[10] https://www.google.com/maps/place/24%C2%B041'45.0%22N+84%C2%B059'28.7%22E/@24.6958241,84.9906574,185m/data=!3m1!1e3!4m12!1m7!3m6!1s0x39f32c5b4bd80877:0xf8dd2e286fa80c97!2sMahabodhi+Temple!8m2!3d24.6959222!4d84.9914193!16zL20vMDFneXl2!3m3!8m2!3d24.695845!4d84.991298
[11] यूनेस्को वर्ल्ड हेरिटिज ऐप्लीकैशन, मिनिस्ट्री ऑफ टुरिज़म एण्ड कल्चर गवर्नमेंट ऑफ इंडिया, 2002, पृष्ठ सं- 3
[12] कौसल्यायन, भदंत आनंद, महावंश, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, उत्तर प्रदेश, 1942, पृष्ठ सं-1-2
[13] तिवारी, डॉ. महेश, निदानकथा, हरिदास संस्कृत ग्रंथमाला, चौखम्बा संस्कृत सीरीज ऑफिस, वाराणसी, 1970 पृष्ठ सं-167
[14] शास्त्री, स्वामी द्वारिकादास, मज्झिमनिकाय, (भाग-1 मूलपण्णासकं), अनुवादित, बौद्ध भारती, वाराणसी, 1989, पृष्ठ सं- 79
[15] वुडवॉर्ड, एफ.एल. ,अंगुत्तरनिकाय, ट्रांसलेटेड, पाली टेक्स्ट सोसाइटी, लंदन एण्ड बोस्टन, 1973, पृष्ठ सं-20
[16] शास्त्री, शांति भिक्षु, ललितविस्तर, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, 1984, पृष्ठ सं- 489-490
[17] शास्त्री, स्वामी द्वारिकादास, महावग्गपालि, बौद्ध भारती, वाराणसी, 1998, पृष्ठ सं-3
[18] भिक्खु ननमोली और भिक्खु बोधि, मज्झिमनिकाय, बुद्धिस्ट पब्लिकैशन सोसाइटी, कैन्डी, श्रीलंका,1995, पृष्ठ सं- 259
[19] शास्त्री, शांति भिक्षु, ललितविस्तर, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, 1984, पृष्ठ सं- 489-490
[20] शास्त्री, स्वामी द्वारिकादास, महावग्गपालि, बौद्ध भारती, वाराणसी, 1998, पृष्ठ सं-3
[21] बरुआ, दीपक कुमार, बुद्धगया टेम्पल एण्ड इट्स हिस्ट्री, बोधगया टेम्पल मैनिज्मन्ट कमेटी, बोधगया,1981, पृष्ठ सं-123
[22] डेविडस्, टी. डब्ल्यू. रीस, बुद्धिस्ट इंडिया, टी फिशर अनविन, लंदन, 1911, पृष्ठ सं- 289
[23] बील, सैमुएल, सी-यू-की, बुद्धिस्ट रेकॉर्ड्स ऑफ द वेस्टर्न वर्ल्ड, ट्रूबनेर एण्ड कंपनी लजगेट हिल, लंदन, 1884, पृष्ठ सं- 118
[24] सांकृत्यायन, राहुल, विनयपिटक, गौतम बुक सेंटर, नई दिल्ली,1934, पृष्ठ सं-71
[25] तिवारी, डॉ० महेश, निदानकथा, हरिदास संस्कृत ग्रंथमाला, चौखम्बा संस्कृत सीरीज ऑफिस, वाराणसी, 1970, पृष्ठ सं-193
[26] कौशल्यायन, भदंत आनंद, जातक अट्ठकथा (प्रथम भाग) अनुवादित, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, उत्तर प्रदेश, 2006, पृष्ठ सं- 121
[27] तिवारी, डॉ० महेश, निदानकथा, हरिदास संस्कृत ग्रंथमाला, चौखम्बा संस्कृत सीरीज ऑफिस, वाराणसी, 1970, पृष्ठ सं-193
[28] वही, पृष्ठ सं-193
[29] वही, पृष्ठ सं-193
[30] सांकृत्यायन, राहुल, विनयपिटक, गौतम बुक सेंटर, नई दिल्ली,1934, पृष्ठ सं- 72

[31] तिवारी, डॉ० महेश, निदानकथा, हरिदास संस्कृत ग्रंथमाला, चौखम्बा संस्कृत सीरीज ऑफिस, वाराणसी, 1970, पृष्ठ सं-193,195
[32] शास्त्री, स्वामी द्वारिकादास,अंगुत्तरनिकायपालि (भाग-2) , बौद्ध भारती, वाराणसी, 2002 पृष्ठ सं- 32
[33] सांकृत्यायन, राहुल, विनयपिटक, गौतम बुक सेंटर, नई दिल्ली,1934, पृष्ठ सं- 72
[34] वही, पृष्ठ सं-73
[35] शास्त्री, स्वामी द्वारिकादास, महावग्गपालि, बौद्ध भारती, वाराणसी, 1998, पृष्ठ सं-7
[36] तिवारी, डॉ० महेश, निदानकथा, हरिदास संस्कृत ग्रंथमाला, चौखम्बा संस्कृत सीरीज ऑफिस, वाराणसी, 1970, पृष्ठ सं-201
[37] शास्त्री, स्वामी द्वारिकादास, दीपवंश, मूल पालि एवं हिन्दी रूपांतर, बौद्ध आकर ग्रंथमाला, वाराणसी, 1996, पृष्ठ सं- 45
[38] तिवारी, डॉ० महेश, निदानकथा, हरिदास संस्कृत ग्रंथमाला, चौखम्बा संस्कृत सीरीज ऑफिस, वाराणसी, 1970, पृष्ठ सं-193,199